वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जुलाई – अगस्त 2016

* हमारे उपकारी
* मोक्ष और विकास का मार्ग
* स्वास्तित्व
* आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

हमारे उपकारी

हमारा पूर्ण अस्तित्व हमारे उपकारियों का दान है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम पर उपकारों की वर्षा हुई है। चारों जगतों के उपकारों के बोझ तले हम दबे हुए हैं। माता पिता ने जन्म दिया, पाला, पोसा, पढ़ाया हमें अपने पैरों पर खड़ा किया, परन्तु इसके ईलावा डाक्टर, इंजनियर, अध्यापिक, राज मिस्त्री, हमारे सगे सम्बन्धी, वैज्ञानिक, सबके हमारे ऊपर बेइन्तहा उपकार हैं, इसके भिन्न भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत इन सबके उपकारों की गिनती ही नहीं की जा सकती, इन सबकी सहायता से हम जिन्दा हैं, परन्तु मनुष्यात्मा अपने नीच सुखों की तृप्ति करने में ही इतने व्यस्त हैं कि इन सबको याद भी नहीं करते, प्रति उपकार तो क्या करना था।

परम पूजनीय भगवान की महान कृपा से इस तरफ कुछ ध्यान जाता है, यह सब उपकारी हमारी शारीरिक वा मान्सिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, परन्तु गुरू महाराज की शिक्षा के अनुसार हम केवल शरीर और दिमाग नहीं, हमारे भीतर हमें संचालन करने वाली जीवनी शक्ति आत्मा है, उसकी रक्षा करने की किसी में समर्थ्य नहीं और न ही ज्ञान है। आत्मा जो मुख्य वस्तु है, जिसके जिन्दा रहने से ही हम जिन्दा है, उसकी सुरक्षा का बीड़ा भगवान देवात्मा ने उठाया है। उनके इस संसार से विदा होने के बाद, उनके द्वारा घड़े हुए कर्मचारियों ने उनकी अद्वितीय शिक्षा हम तक पहुँचाई, इसलिए यह हमारे अध्यात्मिक उपकारी सबसे बड़े उपकारी हैं। वह कष्ट उठा उठाकर हमारे घरों तक पहुँचे, कई बार अवहेलना वा अपमान सहकर भी उन्होंने हमें मिथ्या और पाप में बहते हुओं को बचाया है। हमें विज्ञानमूलक दृष्टिकोण दिया है। एक 2 डाकू, Criminals को बचाया है। मुझे वह फरिश्ते याद आते रहते हैं, जो हमारे घर पहुँचे, मेरे पिता जी को पापों, नशों से बचाया, यदि वह इतने कष्ट न उठाते तो आज हमारा परिवार कहां होता, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। शत: शत: प्रणाम है हमारे अद्वितीय गुरू को, उन फरिश्तों को जिन्होंने सरदारियां छोड़कर फक़ीरी स्वीकार की, हमें अमूल्य साहित्य दिया, हमें अनोखा वातावरण दिया, जिसमें जब आंखे खुलती हैं तो अपने सौभाग्य की सीमा नज़र नहीं आती, हमें क्या से क्या बना दिया। इन दिनों में सेवक यज्ञ के दिन निकले हैं, अब भी हम अपनी हालत को याद करें, और उनकी मेहरबानियों को याद करके नतमस्तक हों। अब भी उन उपकारियों का परलोक से भी आर्शीवाद का हाथ हमारे सिर पर है, जो टूटे फूटे इस मार्ग पर चल रहे हैं। धन्य हैं हमारे गुरू और धन्य हैं उनके कर्मचारी। हम में से सब अपने उन अध्यात्मिक उपकारियों को याद करके, और अपनी अवस्था याद करके उन्हें धन्यवाद दें। और सेवकों के प्रति भी सद्भाव का भाव बढ़ाएं । जो-जो आठ पापों और मिथ्या से भी बचे हुए हैं उनकी संगत हमें बुराईयों से बचने में सहायता करती है। अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर कुछ न कुछ सेवाकारी हों। एक दूसरे से यदि तकलीफ पहुंची है, तो भी उसे भुलाकर सन्मान वा सद्भाव का प्रकाश करके इस यज्ञ को सफल करें।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 8
जुलाई – अगस्त 2016
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मोक्ष और विकास का मार्ग

हमारी धर्म समाज में एक बहुत कीमती वा अर्थ प्रधान शब्द प्रचलित है: -

"उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं, वृथा प्रचार सभी निष्फल हैं"।

यह शब्द सुनहरी शब्दों में लिखे जाने के योग्य हैं और अपने हृदय में हर धर्म अभिलाषी के लिए, गहरा उतारने की आवश्यकता है। यह शब्द संकेत देते हैं कि मुख्य वा असल वस्तु उच्च जीवन है, इसको कभी और किसी कीमत पर भी हृदय से नहीं उतारना चाहिए। यदि उच्च जीवन है तो प्रचार अपने आप होगा, उसके ठोस फल निकलेंगें और प्रचार वृथा नहीं जाएगा।

गुरू महाराज ने बार बार हमारा ध्यान इस सच्चाई की ओर फेरा है, उन्होंने फरमाया है: -

"तुम जीवन लाभ करके ही किसी को जीवन दे सकते हो"

"यदि तुम स्वंय नीच गतियों से नहीं बच सकते, तो तुम औरों को भी नीच गतियों से नहीं बचा सकते।"

"जब तक कर्मचारी का अपना जीवन न बनें, तब तक वह किसी और का जीवन नहीं बचा सकता।"

"बनाने का काम पहले करने की अवश्यकता है, पहले कोई खुद बनें, फिर बनाने का काम करे।"

उच्च जीवन के लिए मोक्ष और विकास की तीव्र इच्छा और उसके लिए संग्राम की अवश्यकता है। इस इच्छा और संग्राम के बिना हमारे प्रचार, हमारे सत्संग सभाएं, हमारे अधिवेशन और शिविर सब निष्फल हैं। सब फोके फायरों के समान है। उनका कोई उच्च फल नहीं निकलता। कागजी फूल कभी सुगन्ध नहीं देते।

इसलिए हमारे लिए यह अति आवश्यक है कि हम देखें कि हम उच्च जीवन अकांक्षी बन गए हैं? क्या हमारे भीतर आत्म - हित अभिलाषा जाग गई है? क्या हमारा कोई मोक्ष और विकास का संग्राम आरम्भ हो गया है, या हम अपना निज का साधन करके, कुछ महिमा के गीत गाकर, किसी अंश कभी प्रभावित होकर, कभी कुछ महिमा देखकर और कभी कुछ अपनी कमी देखकर ही सन्तुष्ट हैं। इसी को अपना हित का मार्ग समझकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसी अवस्था द्वारा मोक्ष और विकास की

प्राप्ति की ही आशा कर रहे हैं।

हमें यह बहुत अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि मोक्ष और विकास का विशेष निर्धारित मार्ग है। उसको जानना और पूरा करना अति अवश्यक है। उस मार्ग को जाने बिना कोई जन उच्च जीवन प्राप्त नहीं कर सकता।

सबसे पहले अवश्यकता है अपने अंह को प्रकृत रूप में देखने, जानने और उससे विरत होने का संग्राम करने की। अंह के काफी मात्रा में घटने वा नष्ट हुए बिना किसी भी मनुष्य को देवात्मा के आद्वतीय देव प्रभावों का गुजारे योग्य मिलना भी असम्भव है। मनुष्य के लिए देव प्रभावों की प्राप्ति के मार्ग में अंह पहाड़ जितनी अड़चन है। इसका दमन होना वा नष्ट होना आवश्यक है। इसके बिना देव ज्योति के पाने का सिलसिला चल ही नहीं सकता।

देवात्मा की ज्योति बराबर पाए बिना मनुष्य को सारे नीच अनुरागों का प्रकृत ज्ञान नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक सच्चे जीवन अभिलाषी के लिए अपने साधनों में गुरू महाराज की ज्योति में अपनी कमीयां, नीचताएं, दुष्टताएं अपने अपराधों को देखना और हररोज़ घन्टा भर उनको लिखना आवश्यक है। जो ऐसा साधन कई वर्षो तक निरन्तर जारी नहीं रख सकता, वह अपने अंह जात घमंड और घृणा के प्रकृत रूप में दर्शन भी नहीं कर सकता। ऐसा मनुष्य मोक्ष और विकास तो एक तरफ वह अपने अति भयानक अंह के प्रकृत रूप में दर्शन ही नहीं कर सकता। वह इस पक्ष में अन्धा ही कबर में चला जाता है। अपने अंह को देखना वा जानना हम धर्म अभिलाषी जनों के लिए आवश्यक है। 4 – 6 महीने अपनी कमीयां वा नीचताएं लिखते रहकर कुछ कुछ रोशनी मिलने लगती है, जो हमें अपने महां रोग वा कोढ़ का ज्ञान दे सकती है और इससे मुक्त होने का फिक़र पैदा कर सकती है।

गुरू महाराज ने इस पक्ष में भी जगह जगह यह रोशनी प्रदान की है। उन्होंने फरमाया है :–

"याद रखो, 'मैं' को मारे बिना तुम्हारा कुछ नहीं बन सकेगा।"

गुरू चरणों में आकर, उनके आद्वतीय मिशन का अंग बनकर, हमें अपनी 'मैं' को मारना अति आवश्यक है। हमारी "मैं" पहाड़ की तरह हमारे हित के मार्ग में अड़चन बनी हुई है।

उपरोक्त अपनी नीचता के विषय में साधन करते करते हमें देव प्रभाव मिलने लगते हैं, जो हमें हमारा घंमड और नीच घृणा दिखाते हैं और धीरे धीरे उनसे मुक्त करते हैं। अपने अंह का सच्चा बोध और उसका सच्चा खौफ और दुख हमें एक नई दुनियां में जन्म देता है, हम इस बोध के दाता के महा ऋणी अनुभव करते हैं और धन्य धन्य होते रहते हैं।

उपरोक्त शुभ संग्राम के अर्थात अपनी "मैं" को मारने के संग्राम के लगातार वर्ष दो वर्ष जारी रखने से धीरे धीरे नेचर का आत्मिक जगत का महान नियम पूरा होने लगता है, वह यह कि अधिकारी मनुष्य को देवात्मा के लासानी देवरूप की अनोखी झलक दिखाई देने लगती है। इस सम्बन्ध में देवात्मा ने सिद्धान्त दर्पण में विशेष रूप से लिखा हैं: –

"अधिकारी और अनाधिकारी आत्मा" इस हैडिंग से स्पष्ट किया है कि ज्यों ज्यों अंह का अधिकार घटता जाता है, वैसे - वैसे मनुष्य देव प्रभावों की प्राप्ति का अधिक अधिकारी बनता जाता है। अंह के अधिकार के विशेष सीमा में घटने से अधिकारी जनों को ऐसी विलक्षण ज्योति या प्रभावों का दान मिलता है जो उसे देव रूप की अति सुन्दर और अति आकर्षिणीय झलक दिखानी शुरू करता है और इस झलक को अधिक से अधिक देखने के योग्य होना और उसके आगे आपार दीनता से नत मस्तक होना आरम्भ हो जाता है। यही देवात्मा की सच्ची पूजा है। इससे अधिकारी मनुष्य के भीतर अपनी योग्यता के अनुसार देवात्मा के महा विशाल और महान रूप के लिए अटल विश्वास, श्रद्धा, कृतज्ञता के भाव पैदा होने लगते हैं। इनके बढ़ने से अधिकारी आत्मा को देवात्मा के जोरदार देव प्रभावों की प्राप्ति के साथ उनका रूप अति आकर्षणीय दिखाई देने लगता है, जिससे अधि कारी आत्मा झुक झुक कर उनके साथ जुड़ा हुआ अनुभव करता है। कभी बिछड़ना नहीं चाहता। इस अवस्था में पहुंचकर इन्सान को इतने प्रभाव मिलते हैं कि वह अपने अंह अनुराग, काम अनुराग, धन सम्बन्धी अनुराग, लोभ लालच, स्वार्थ अनुराग और मोह लालसा आदि से मुक्त होने की सच्ची इच्छा महसूस करता है। ज्यों - ज्यों अधिकारी आत्मा देवात्मा के महा आकर्षणीय रूप को देख देखकर रोज रोज विस्मित होता है, त्यों - त्यों उसको उपरोक्त नीच अनुरागों से अपने आप मोक्ष प्राप्त होती जाती है और देवात्मा के साथ जोड़ने वाले सर्वोच्च भावों का विकास होता जाता है। स्वार्थ के नाश और परोपकार धीरे - धीरे विकसित होते जाते हैं। अधिकारी मनुष्यात्मा का पूर्ण जीवन सफलता के मार्ग पर अडिग पड़ जाता है और अकसर धन्य - धन्य रहता है।

ऐसा अधिकारी जन जो स्वंय मोक्ष और विकास का राही बन जाता है, वह जो प्रचार आदि का संग्राम करता है वह पूर्ण निष्फल नहीं जाता।

काश! हम अधिक से अधिक संख्या में उक्त मार्ग को पहचान सकें और उसको अपना कर अपना और दूसरों का हित कर सकें।

देवात्मा फरमाते है

तुम उसके अनुसार ही चलना चाहते हो, जिसमें तृप्ति बोध होती है। फिर धर्म समाज के क्या मायने? इसका नाम सुख समाज ही क्यों न रख दें? आया तुम धर्म समाज में भी सुख ही पाने आए हो? तुम में से कोई यह कह सकते है कि हम भलाई का काम करते हैं। आया भला काम कहीं और नहीं हो रहा? प्रश्न यह है कि तुम्हारा लक्ष्य क्या है? तुम धर्म समाज में काहे के लिए आए हो? तुम में और औरों में क्या अन्तर है? तुम जीते काहे के लिए हो? कुछ जन अवश्य पैदा हों, जो यह कहें कि हम सुख के लिए नहीं जीते, हम आत्मिक शुभ के लिए जीते हैं, हमारे और दूसरों के लक्ष्य में अन्तर है। हमने नीच शक्तियों से मोक्ष प्राप्त करनी है। क्या तुम दिखा सकते हो, तुम नीच सुख अनुरागी नहीं आत्महित अकांक्षी हो।

स्वास्तित्व

स्वास्तित्व का अर्थ है अपना आप। अस्तित्व क्या है? जो कुछ हम हैं और हमारी हस्ती है। अब प्रश्न यह है कि हम हैं क्या? बाहर से देखने से हम अपने शरीर को अनुभव करते हैं और यह भी अनुभव करते हैं कि हम केवल शरीर नहीं, हम अपने भीतर कई प्रकार के भाव रखते हैं, ज्ञान रखते हैं और उस ज्ञान और भावों का हम प्रकाश भी करते हैं। इसीलिए हम केवल शरीर नहीं, हमारे भीतर जीवनी शक्ति है, जो शरीर के द्वारा हमारे से विभिन्न प्रकार की क्रियाएं करवाती है। शरीर और जीवनी शक्ति (आत्मा) को लेकर ही हमारा अस्तित्व है। प्रत्येक मनुष्य अपने अस्तित्व की रक्षा करना चाहता है। केवल मनुष्य ही नहीं पशु पक्षी और अन्य जीव भी अपनी रक्षा चाहते हैं। स्वास्तित्व यज्ञ का भी यही लक्ष्य है कि हम अपने अस्तित्व की रक्षा वा विकास कर सकें। परन्तु यह प्रबल इच्छा रखकर भी क्या कोई अपनी रक्षा और विकास कर सकता है। नहीं, उसका अपना अलग नियम है। शरीर की रक्षा करना चाहकर भी यदि हमें खुराक न मिले, पीने को पानी न मिले तो हमारा शरीर नहीं बच सकता। शरीर और आत्मा में से पहले हम शरीर को ही लें, हम स्थूल शरीर रखते हैं, परन्तु क्या हम सदा उसको जीवित रख सकते हैं। नहीं रख सकते। परन्तु शरीर को निरोग वा दीर्घायु रखने के अपने नियम हैं। मनुष्य के विकास और विनाश के नियमों को जान लिया है, परन्तु उसकी कल्पना यहां तक ही पहुंची है, कि शरीर पर नियम काम करते हैं, और विनाश और विकास के नियम काम करते हैं। परन्तु क्या यह नियम हम अपने आत्मा के सम्बंध में भी देख सकते हैं।

एक आत्मा जो दिन पर दिन नीच से नीच होता जाता है। वह विनाश को प्राप्त हो रहा है। जैसे पहले वह नशा नहीं करता था, मांसाहार नहीं करता था, अब वह करने लग गया है, तो उसकी यह क्रियाएं उसे नीच बनाती हैं, कोई मनुष्य ईमानदार था, पवित्र था, परन्तु अब नहीं रहा तो यह उसके कदम विनाश की ओर बढ़ रहे हैं और यह क्रियाएं उसकी आत्मा में भाव शक्तियां करवाती हैं, शरीर तो केवल औज़ार है।

यदि कोई जन किसी भली संगत से नशे छोड़ता है, मांसाहार छोड़ता है। रिश्वत लेना वा बेईमानी छोड़ता है पवित्र और वफादार बनता है, तो वह विकास की ओर बढ़ रहा है। शारीरिक और आत्मिक विकास से ही हमारे अस्तित्व की रक्षा है।

जैसे शारीरिक रोग धीरे धीरे शरीर को दुर्बल बना देते हैं, उसे दुखों में फंसा देते हैं, उसी प्रकार जितने भी नीच भावों से नीच क्रियाएं हम करते हैं वह हमारे आत्मा के रोग हैं। यह आत्मा के रोग यदि बढ़ते जाते हैं, तो आत्मा भी दुर्बल होता और नष्ट हो जाता है। यह शिक्षा कि शरीर मरता है और आत्मा अमर है, अंध विश्वास पर आधारित और हानिकारक है। आत्मा की मृत्यु के साथ हमारा अस्तित्व भी नष्ट हो जाता है।

शरीर का ज्ञान भी बहुत आवश्यक है, परन्तु आत्मा का ज्ञान उससे भी अधिक आवश्यक है, परन्तु यह ज्ञान बहुत सूक्ष्म है और कठिन है।

यह जानना कि आत्मा क्या है? उसकी उच्च वा नीच गतियां क्या हैं? उसका विनाश और विकास क्या है, यह बहुत लम्बे समय का काम है। आत्मा के विकास के लिए किन किन सात्विक भावों की आवश्यकता है। यह उससे भी आगे का कदम है।

आत्मा का सच्चा, ठोस और विज्ञान मूलक ज्ञान पाने के लिए देवात्मा का दर खुला है। उन्होंने आत्मा के विषय में वह सत्य और तत्व खोजे हैं, जो हमें विश्व में कहीं नहीं मिलते। जीवन तत्व क्या है? इसका ज्ञान देवात्मा ने पू० देवशास्त्र तीसरे खण्ड की रचना करके एक विज्ञान मूलक शिक्षा का भण्डार खोल दिया है, जो एक शीशे की तरह मनुष्य को उसकी नीच गतियों को स्पष्ट करता है और उनसे कैसे बचा जा सकता है। यह मार्ग दिखाता है उच्च भावों को कैसे विकसित किया जा सकता है, इसका ज्ञान देता है।

अपने अस्तित्व की रक्षा और विकास के चाहवान प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस ग्रंथ का अध्ययन करना अति आवश्यक है। देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर और ऐसे ग्रंथों का अध्ययन करके ही हम इन दिनों को सफल कर सकते हैं। जिन जनों ने ऐसे साधन किए हैं, समय समय पर उन्होंने अपने आत्मा का विकास किया है।

इस अंक में कुछ ऐसे पत्र दे रहे हैं। जिनसे देवात्मा के देवप्रभावों ने किस कदर एक एक जन को अपने अस्तित्व के सम्बंध में कुछ बोध दिया और उसे विनाश पथ से किसी सीमा तक हटाकर विकास की ओर मोड़ा।

मेरा असल रूप दिखवा दिया

हे दाता, आपका मैं किन शब्दों में धन्यवाद करूं, आपने ऐसे धर्म सम्बन्धियों की मण्डली बनाई है, कि जो विश्व में अपना एक विशेष स्थान रखती है, जिनके संग्राम से आपका दर मिला, आपकी स्थापित धर्म संगत मिली, अनुपम साधन विधि मिली, अनुपम त्यौहार और सबसे बहुमूल्य देव ज्योति मिली, जिसमें अपने रूप के कुछ दर्शन हुए। हे दाता! आपने मेरे जैसे अबोधी, नीच जीवनधारी वा कृपा-पात्र जीव तक अपनी ज्योति पहुंचाकर मेरे हित के द्वार खोल दिए। आत्मा के विचार से मुझ अंधे को आंखे प्रदान की और जो महान बरकतें मिली, उसका शब्दों में ब्यान करने में असर्मथ्य हूं। सच है, "वह जुबां कहां से लाऊँ, तुम्हारी महिमा के जो गीत गाए।" आपकी ज्योति में अपना अपराधी रूप नज़र आता है। काश! आपका तेज प्राप्त हो सके और अपनी नीचता के लिए उच्च घृणा पैदा हो सके।

हे भगवान! जब नीच भावों का हमला होता है, तो आत्मा में अंधेरा छा जाता है, जिस प्रकार बहुत बड़ा तुफान आ गया हो। नीच भावों की आंछियां चलती हैं। उसकी महा हानियों से बचने के लिए मैं अपने आपको लाचार पाता हूं। इस भयानक आंधी में भी अपनी पत्नी को चट्टान की तरह स्थिर देखता हूं। वह मुझे अपने से महान नज़र आती है। अपने में बहुत सी कमज़ोरियां वा दुर्बलताएं नज़र आती हैं। ऐसी हालत में अपनी धर्म पत्नी के लिए भी हानिकारक बन जाता हूं। तुफान रुकने पर पछताता हूं, अपने आपको धिक्कारता हूं, शर्मसारी अनुभव करता हूं। आपकी रोशनी लाईट हाऊस की तरह लाईट देती रहे और मैं अपनी कमज़ोरियों से बच सकूं। अपनी पत्नी का अपने से महान रूप देख कर उन पर अत्याचार से बच सकूं। वह अपमान वा अत्याचार सहकर भी,

कठोर वचन सुनकर भी, यहां तक कि मार खाकर भी मेरे हित का सोचती हैं, मेरी कमियों की ओर ध्यान न देकर मेरे हित के सुझाव देती हैं, यह बात उनके आगे झुका देती है। हे भगवान! यह सब आपकी ही कृपा है, वरना मुझे तो उन में कमीयां ही कमीयां नज़र आती थी। उनकी हितकर बातें भी अपमान जनक लगती थी। उनके हितकर सुझाव भी तीर की तरह चुभते थे। बदले की भावना से भरकर उनको कठोर वचन बोलता, अपमान करता, उनकी आत्मा छलनी छलनी हो जाती थी। वह दुखी दिल के साथ कहा करती थी कि कम से कम यह तो देख लो कि मैं यह बात क्यों कह रही हूं। मुझसे तुम्हारी हानि देखी नहीं जाती। आपकी किसी गल्ती के कारण आपका कोई अपमान कर जावे, यह मुझसे देखा नहीं जाता। आपने समाज में जाकर भी कुछ नहीं सीखा। समाज का नाम डुबो दिया। बच्चे मेरा अपमान करते हैं, तो आप खुश होते हैं, कितने कठोर हो। बिमार हो जाती हूं औरों के घर फैंक आते हो। स्वार्थी हो, तुम धर्म नहीं पा सकते। लोग तुम्हें भक्त जी कहते हैं पर मेरे लिए पत्थर समान हो। मुझे आशा थी कि आपके परिवार से स्नेह वा प्यार मिलेगा और मुझे बचपन के सब दुख भूल जाएंगे, पर क्या पता था कि उससे भी बढ़कर नर्क की आग में झोंक दोगे। मेरे पिता ने कभी फूल की छड़ी भी नहीं लगाई थी। यहां आकर अपमान ही अपमान और मार तक खानी पड़ी है। जब तुम ही मेरे लिए इतने कठोर हो तो मैं किसके पास अपील करूं। कभी नहीं सोचा कि मेरे पास कोई कपड़ा है, कभी बच्चों के खाने के लिए कुछ नहीं लाए।

उनकी यह बातें बिल्कुल सच्ची होती थी पहले तो घर कुछ लाता ही नहीं था यदि लाता तो इतना थोड़ा कि बच्चे लड़ने लगते। दिल करता है कि अपने आपको सख़्त से सख़्त सजा दूं, मैं इतना स्वार्थी हूं कि मनुष्य कहलाने के भी योग्य नहीं। मेरी पत्नी और बच्चे मुझे कैसे क्षमा करेंगे। मैं न तो पति सही बना और न पिता। मैं अपने बच्चों के अच्छे गुणों की कदर तो क्या करनी थी, उल्टा उन्हें अपमानित करता। मेरे होते हुए भी मेरे बच्चे अनाथों की तरह पले हैं। उनकी कमाई में से भी उनको कुछ देना नहीं चाहता। मैंने अपने जीवन का कोई अच्छा उदाहरण उनके लिए नहीं बनाया। मैं बाप नहीं जल्लाद हूं। इससे बढ़कर शर्मनाक बात क्या होगी कि एक दिन मैंने अपने एक पुत्र को इतना ज़लील किया कि वह रोने लगा। हाए! मैं इतना दुष्ट हूं कि अपने एक बेटे की मौत पर नंगा ही उसको कफन में लपेट दिया, उसके डालने के लिए नया कपड़ा नहीं लाकर दिया। वह आखरी समय तक सेवाकारी होता हुआ शहीद हो गया। परिवार की पालना में वह रुखा सूखा खा कर कठिन संग्राम करता हुआ खाली हाथ इस संसार से चला गया।

हे सतगुरु! आपकी ज्योति में यह नज़र आ रहा है कि मैं बच्चों की थोड़ी सी गल्ती पर जरूरत से अधिक मारता था, उन्हें सजा देता था, उनकी जायज़ आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं करता था। हे दाता! आपकी अनुपम ज्योति मिलती रह सके। मुझे अपना चण्डाल रूप, पापी और कपटी रूप दिखाई देता रहकर अपने ऊपर लानत देता रहूं। परिशोध की आग में से तपकर कुछ पापों का परिशोध कर सकूं।

हे भगवान! आपकी ज्योति को जितना पाया है, मेरा सम्बंध अपनी धर्म पत्नी के साथ

हितकर हो गया है। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उनके साथ मेरा सम्बंध बेहतर हो सकेगा। उनके उपकार और सेवाएं दिखाई दें सकेंगे। मैं आत्म सम्मान के चक्कर में अपना अहंकार बढ़ाकर अपनी महां हानि कर रहा था। आपकी कृपा से उपकारियों और सेवाकारियों का रूप नज़र आया है। बच्चों के सम्बंध में भी काफी बेहतरी आई है। आपकी ज्योति सदा मिलती रहे और धर्म सम्बन्धियों का सहयोग मिलता रहे और मेरी भलाई का द्वार खुल सके।

(एक सेवक)

अपने जीवन पर एक नज़र

समाज का मैंबर बन गया - शराब, मांस आदि से बच गया। परन्तु सेवक बनकर भी मेरा ध्यान कभी अपनी तरफ नहीं गया। 1988 के महोत्सव के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने मुझ जैसे घटिया आदमी को समाज के काम के लिए रख लिया। मेरे भले का कुछ मार्ग खुलना था। मैं सत्संगों में शामिल होने लगा तो मेरा ध्यान अपनी तरफ गया कि मैं क्या बना फिरता हूं ...

पिता परलोक चले गए, मेरी तरफ से सबसे बढ़कर दुखी गए। मैं किसी काम काज में नहीं दिल लगाता था। मेरी पढ़ाई के लिए मेरी सुख सुविधा के लिए बचपन से वह संग्राम करते रहे परन्तु मैने उनका वांछित सम्मान तो क्या करना था, अपमान कारी वा दुख देने वाला ही था। अपनी विधवा मां को बहुत सताया। वह मेरे लिए इतनी सेवाकारी होती थी कि "पुत्र को मैं खुद खाना खिलाऊं" मैं आग बबूला हो जाता कि रोटी पहले क्यों नहीं बनाकर रखी। यदि बनाकर रख देती तो कहता कि पहले क्यों बनाकर रखी। अर्थात किसी ओर नहीं छोड़ता था। मैं उन्हें बहुत सताता। मेरी माता मेरे लिए इतना करती है और करती रहीं हैं, मैं नामुराद अब भी उन्हें तड़पा जाता हूं। पहले तो कुछ ब्रेकें लगी, परन्तु आन्तरिक प्रकृति तो वही थी। ज़रा सी अपने सुख पर चोट लगी, तो उल्ट पुलट हो जाता, जो नहीं कहना था, वह कह जाता हूं, फिर तड़पता हूं, पत्र लिखता हूं, क्षमा मांगता हूं, यदि सत्गुरु की जीवन दायक ज्योति न मिले, तो मेरा राक्षसी और घृणित रूप हो जाता है।

बाकी बहन भाईयों के साथ भी स्वार्थमूलक सम्बंध रहा, प्रत्येक से लाभ उठाए, और दुर्वव्यवहार किए। परन्तु फिर भी उन्होंने मेरे लिए इतना किया, परन्तु मैं नाशुकरे ने सबके दिल ही दुखाए हैं।

परन्तु मैं गल्त हूं, मैं यह कभी भी नहीं मान सकता था, यदि गुरु महाराज की ज्योति शक्ति न मिली होती, जितनी देर संगत में रहता हूं। अपनी तरफ ध्यान जाता है। माता के लिए, बहन भाईयों के लिए कुछ न कुछ करने या कम से कम उन्हें परेशान न करने के भाव पैदा होते हैं। यदि सम्बंध ही बेहतर हो जाएं तो मेरा गुरु मे साथ जुड़ना सफल हो जाए। हानि परिशोध करने का भाव पैदा होता हैं इससे पहले अपना आप अच्छा ही अच्छा लगता था।

कई लोगों वा संस्थाओं की पुस्तकें लेकर वापिस नहीं की थी, वह वापिस की। इनके विषय में कोई कुछ नहीं जानता था। गुरु महाराज की रोशनी मिलने से मुझे अपना आप खराब, चोर, दम्भी, पखंडी नज़र आया। अपने स्कूल की पुस्तकों के पैसे प्रिसीपल को देने की पेशकश की। उन्होंने

मना किया कि इतना पुराना हिसाब कहां adjust करेंगें मैंने साल का हितस्रोत और धर्म जीवन का स्कूल के नाम चंदा भर दिया।

म्यूनिसपल कमेटी की कुछ देर की नौकरी में वहां से किताबें उठा लाया, वह वापिस की। B.Ed करते हुए मोगा ट्रेनिंग कालिज की कई पुस्तकें अपने पास रख ली थी, वापिस करने के लिए गया, तो लाईब्रेरियन साहिब कहने लगे कि यह काम तुमने अच्छा नहीं किया तो मैंने कहा कि अच्छा तो मैंने 2 - 3 साल पहले नहीं किया था। अब तो वापिस करके अपनी आत्मा की मैल धो रहा रहूं। मैंने देव समाज की पुस्तकें और कागज वापिस किए। पंजाब यूनिवर्सिटी की एक किताब वापिस की। एक जन की पुस्तक गुम हो गई थी उसके स्थान पर उसे नई पुस्तक ला कर दी और उनसे क्षमा मांगी। बी. एड में ही लुधियाने से पंजाब साहित्य ऐकेडमी की एक किताब उठा लाया। उसके बदले और किताबें लाकर दी।

कई साल पहले बस में जा रहा था, कुछ पैसे गिरे हुए मिल गए, वह वापिस कर सकता था, परन्तु शैतान मन नहीं माना, पैसे परिशोध फंड में दिए। युनिवर्सिटी में स्वर्गिय डाक्टर रवि जी ने नोट साईकलो सटाईल करवाने के लिए 5 - 5 रूपये विद्यार्थियों से इकट्ठे करने के लिए कहा। कुछ तो खर्च हो गए, बाकी 1100 रूपये के करीब हज़म कर गया। अपने एक उपकारी अध्यापिका के पास से पैसे ले आया, यदि गुरु महाराज की ज्योति न मिलती तो कभी वापिस न करता। जब वापस करके आया तो उनके सामने समाज की महिमा महान हुई।

मेरा चोर, डाकू का ऐसा घृणित रूप था, ऐसी ऐसी नीच गतियां की हैं, जिनका पता कुछ न कुछ गुरु की रोशनी में लगता है। एक बार बस में सवार था, बहुत भीड़ थी, कंडक्टर को कहा फिर पैसे देता हूं, पर नहीं दिए, परन्तु किसी और को टिकट के पैसे देकर दानी करण बन गया। फिर कंडक्टर को वह पैसे वापिस करके आया।

स्कूल की mess का इंचार्ज बन गया, पूर्ण सम्भव था कि मैं अमानत में ख़्यानत करके सेवकी की प्रतिज्ञाएं भंग कर सकता। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की आत्मकथा पढ़ने काअवसर मिल गया। महापाप से बच गया। यदि मुझे यह रोश्नी न मिलती तो कपटी, चोर, जवारी और ठग ही रहता, यदि अब भी समाज से दूर हो जाऊं, पुस्तकें पढ़ने को न मिलें, सत्संग न मिलें, तो वही बन जाऊंगा जो पहले था।

मैं खूब शराबी कबाबी था, अब बच्चों को नशों से बचने की प्रेरणा देता हूं। यह मेरे लिए कभी भी सम्भव नहीं था। गुरु महाराज जी का सेवक बने रहने की लालसा वा इच्छा ने मुझे अंडे के बिलों तक पर साईन करने से, ऐसी चीज़ें लाने से रोका, कितना बड़ा परिवर्तन!

शराब, सिगरेट की लत ने अब तक मेरा ऐसा हाल किया होता कि शायद अब तक मैं जिंदा ही न होता, अब तक पूरी तरह गरक गया होता, गुरु महाराज के देव असरों ने बचा लियां कुछ हानि परिशोध करने का बल दिया, नहीं तो अपनी ऐसी गतियां खराब नहीं लगती थी, परिशोध तो क्या करना था।

1988 में मैं श्रेणी में उन्नत होना चाहता था, परन्तु धीरे धीरे यह बोध हुआ कि मैं अंधेरे का जीव हूं। अपने की और दूसरों को महा हानि पहुचांने वाला हूं महा स्वार्थी, खोटे विचारों वाला हूं, मैं इस योग्य नहीं कि मेरा और मेरे परिवार का भला हो सके।

इस बार मैं सभा में पीछे बैठता रहा, कोई काम करने का उत्साह नहीं था। पहली ही सभा में गुरु महाराज के मानवता के लिए महा उत्पीड़न और दुख सुनकर कुछ दिल नम्र हुआ। यह समझ आई कि सचमुच गुरु महाराज के मिशन को मैंने अपना मिशन नहीं बनाया, परन्तु और ही अपनी नीच रुचियों की तृप्ति के लिए भाग दौड़ कर रहा हूं। गुरु की तरफ ध्यान कम है, दुनियावी पदार्थो की ओर ही भटकन बढ़ी है। काश! मेरे भीतर अपने भले की सेवाएं विकसित हो सकें। उच्च जीवनधारी कर्मचारियों से कुछ लाभ उठा सकूं।

सत्संग से दूर रहकर जीवन में बारीकी में तबदीली आनी शुरू हो गई। पहले से बढ़कर स्वार्थी बनने लगा हूं। सत्संग से दूर रहकर मेरा पूर्ण नाश होना आवश्यक है। अपना स्वार्थ बढ़ रहा अनुभव होता है।

उपकार तो क्या, प्रति उपकार भी नहीं करता। देवात्मा के देव प्रभाव पाने वाले कर्मचारियों की इच्छा पूरी न करके, उनके आदेश अनुसार न चलकर कष्ट पहुंचाने वाला बना हूं। स्वयं भी दुखों में फंसा हूं। उनको परेशान करने का अपराध किया है। देवात्मा गुरु की कैसी अज़मत है। जब पहली अपनी हालत सामने आती है कि शराबी कबाबी, बहन, भाईयों माता पिता को दुख देने वाला, पढ़ लिखकर भी उनकी कमाई कूंए में डाल दी पर कमाल वह मां, जिसने अपने माथे पर शिकन नहीं डाला, शराब पीकर ऐसी फरिश्तों जैसी मां को आस पड़ोस के सामने गंदा बोलकर अपमान किया, मैं कैसा नाशुकरा बेटा हूं। शराब पीकर पिता का अपमान किया। मैं सचमुच बहुत अपराधी हूं, मेरे ऐसे ऊपर से पालिश किए रूप को मेरा असली रूप पता नहीं लगता। घमंड इतना बढ़ गया है कि किसी को खातिर में नही लाता। नम्रता, हमदर्दी नहीं है। मैं और स्वार्थी, कोढ़ी और नीच बन रहा हूं। ऐसे सत्गुरु के दरबार में ही मैं बच सकता हूं।

अति उपकृत

एक सेवक

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जान कर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव इस वर्ष भी हर वर्ष की तरह पूरे चावभाव से 16 सितम्बर 2016 से 18 सितम्बर 2016 तक मनाया जा रहा है। इस वर्ष यह मुबारक उत्सव देव आश्रम निकट डेराबस्सी में ही रखा गया है। इस उत्सव से पहले 7 दिन का विशेष सत्संग (09 सितम्बर 2016 से 16 सितम्बर 2016 की सुबह तक) रखा गया है। आपकी सेवा में पुरज़ोर प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं ऐसे शुभ अवसर का लाभ उठाएं, बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी अधिक से अधिक संख्या में साथ लाकर सच्चे पुण्य के भागी बनें। सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा 16 सितम्बर शाम 5.30 बजे आरम्भ होगी।

आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

मेरे पूजनीय सतगुरू!

मैं जीवन व्यतीत करता था, परन्तु मैं जीवन की फिलासफी, आत्मिक शक्तियों का महत्त्व, तथा नीच प्रकृति की बेलगाम ताकतों - जिन्हें मैंने अपने अन्दर बढ़ा लिया था, और जो मुझे जंगली पशु बना रही थीं - के खतरों से अनजान था। पूर्ण स्वार्थी जीवन व्यतीत करने और दुनियां को अपनी नीच रुचियों की तृप्ति का अखाड़ा बनाने की अपनी भयानक छवि मुझे भयभीत नहीं करती थी। मेरी बेलगाम नीच रुचियां मुझे दूसरों के लिए हानिकारक और दुखदायक बनाती थी। मेरे दूषित विचार मुझे दूसरों के अधिकारों का अपहरण करने की तरफ ले जाते थे। **परन्तु मुझे उनका पता कुछ नहीं था। उन घृणित विचारों और कामों की लड़ी अब अपने असल घृणित रूप में मेरे सामने आ रही है।** आपकी ज्योति ने मुझे अपनी पिछली तस्वीर दिखा दी है और मैं अत्यन्त लज्जित हो रहा हूं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मैं एक जंगली जानवर का जीवन व्यतीत करता था। अहंकार के अधीन होकर मैं अपने उपकारियों का भी अपमान करता था। मेरे ऊपर ग़लत ताकतों का राज्य था और दूसरों के सम्बन्ध में मैं ग़लत जाता था। मेरा आत्मा खतरनाक, हानिकारक और विषैले फल पैदा करती था। हाय! मेरी कैसी दशा होती, यदि मैं उसी पथ पर चला चलता। परन्तु आपकी ज्योति ने मेरी उद्दण्ड नीच प्रकृति का हानिकारक रूप मुझे दिखाया है और कम से कम कुछ पतनकारी रुचियों से मेरे भीतर घृणा पैदा कर दी है। मैं उनसे बच गया हूं। मुझे उनके भयानक नतीजों से बचा लिया गया है। अब मैं आपको ज्योति स्त्रोत जान कर पथ प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए आपके चरणों की ओर दौड़ता हूं। आपने एक सीमा तक मेरे भीतर सच्ची सहानुभूति, सच्ची बन्धुता, सच्चा सेवाभाव और उच्च संगत की भूख पैदा की है। मैं बुरी संगत - चाहे वह इस दुनियां के बड़े से बड़े लोगों की भी क्यों न हो - के भयानक फलों को देखने के योग्य हो गया हूं। मैं उनसे परे रहता हूं। मैं प्रतिदिन आपके दर तक पहुंचता हूं और वह बरकतें पाता हूं जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह आनन्द और स्वर्गीय सुख अनुभव करने की वस्तु है, बयान करने की नहीं। मेरा जीवन एक सीमा तक सुन्दर बन गया है। आपने इसे हितकर बना दिया है। काश! मेरा दिल सदा श्रद्धा से आपके चरणों में झुका रहे।

जीवन पथ कुछ और है, विद्या बुद्धि और

मेरे भगवान्!

यद्यपि मैंने एक भारतीय विश्वविद्यालय की सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त की थी और उस विश्वविद्यालय की दर्शन (फिलासफी) और मनोविज्ञान की सबसे ऊंची परीक्षा पास की थी, फिर भी मैं अन्धकार में भटक रहा था। मुझे ज्ञान नहीं था कि मेरा आत्मा गठन प्राप्त जीवनी शक्ति है और विकास, पतन और मौत के नियमों के अधीन है।

मैंने कालेज में नैतिक फ़िलासफ़ी (Moral Philosophy) विषय लिया, परन्तु यह सारा ज्ञान मुझे अपने आत्मिक रोगों का और मनोविज्ञान मुझे जीवन की नीच और हानिकारक गतियों और उनके भयानक फलों को न दिखा सके। मैं वही हानिकारक जीवन व्यतीत करता था, उसके बढ़ जाने पर दुखी भी होता, परन्तु मैं उसके विषय में अज्ञानी था। जब आपकी

सर्वोच्च ज्योति मेरे आत्मा में प्रविष्ट हुई तो मैंने वह ज्ञान प्राप्त किया जो मेरे लिए एक महान वरदान सिद्ध हो रहा है। मैंने अपनी रुचियों के असल रूप को देखा है और मैं न केवल अपने आपको किन्तु दूसरों को भी उनके भयानक फलों से बचाने के योग्य बन रहा हूं।

हे मेरे पूजनीय सत्गुरू! तब मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं? मैं दिल की गहराई से यह कामना करता हूं कि आप हमारे सिरों पर देर तक विराजमान रहें।

आपकी ज्योति हमें होश की अवस्था में रखती है

मेरे पूजनीय सत्गुरू!

आपकी ज्योति महा अमूल्य है, क्योंकि वह मनुष्य को होश की अवस्था में लाती है। मनुष्य आत्मा जो नीच रुचियों और नीच अनुरागों तथा अहंकार की विकृत शक्तियों के अधीन हैं, अपना बहुत सा समय धोखे में गुज़ारते हैं। ऐसी अवस्था में वह होश जिसमें सच्चाईयां अपने असल रूप में दिखाई देती हैं, सम्भव नहीं है। अपनी ज़ात को ऊंचा समझना, जबकि वास्तव में बात इसके उलट प्रतीत होती है, निपट पागलपन है। विवाह, मृत्यु तथा अन्य अवसरों पर अपने घमंड को तृप्त करने के लिए हज़ारों रुपए खर्च करना और भले काम के लिए दान देते समय दिल में दुख महसूस करना, पागलपन के सिवाए कुछ नहीं। केवल धन की खातिर धन इकटठा करना और इसी को जीवन का लक्ष्य बनाना पागलपन है। अपने बच्चों को आसमान से उतरे हुए और दूसरों के बच्चों को उनसे घटिया समझना, चाहे सच्चाई उसके उलट ही हो, धोखा और पागलपन है। अपने अनाधिकारी बालिग बच्चों के लिए धन छोड़ जाने के लिए धन एकत्र करना, जबकि वह बच्चे अपने पावों पर खड़े होने के योग्य हों, और एक हितकर समाज या मनुष्य मात्र की भलाई की परवाह न करना, जबकि उनका नैतिक हक अधिक हो, पागलपन और उलटी दृष्टि है। मिथ्या विश्वासों को निजी वस्तु समझ कर उनके साथ चिपके रहना और दलील, परीक्षा या तजरबे की अपील को परे फैंकना, एक धोखा और पागलपन की बात है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण दिए जा सकते हैं।

भगवन्! मैं देखता हूं कि लाखों मनुष्य धोखे में ही जीवन व्यतीत करते हैं। वह असलियत से परे जीवन व्यतीत करते हैं और इसी अवस्था में मर जाते हैं। जिन्हें आपके श्री चरणों में आने और आपके देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभावों को पाने का अधिकार मिलता है, वह जानते हैं कि आपके श्री चरणों में रहना कैसा सौभाग्य है। आपकी ज्योति के प्रकाश में यह धोखे दूर होने आरम्भ होते हैं। नीच रुचियां और नीच अनुराग तथा अंह सम्बन्धी शक्तियां, जो बढ़ते बढ़ते आत्मा के रोग बन गए हैं, उन उच्च शक्तियों से नष्ट होने लगते हैं कि जो उच्च शक्तियां आप अधिकारी मनुष्यों में पैदा करते हैं यही कारण है कि जब तक यह होश की अवस्था कायम रहती है, आपके तुच्छ सेवक आपकी महिमा के गीत गाते नहीं थकते। उनके इर्द गिर्द के लोग उन्हें पहले से पूर्णत: भिन्न और आदर के योग्य देखने लगते हैं।

मैंने भी आपके चरणों में बहुत लाभ उठाया है। आपने कुछ सम्बन्धों में मुझे होश की हालत में आने के योग्य बनाया है। इससे आगे आपने मुझे अपने उन नीच भावों को देखने के योग्य बनाया है, जो धोखे पैदा करते हैं और अब मैं जानता हूं कि मेरी अपनी शक्तियों पर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह मुझे ठीक मार्ग पर ले जाएंगी।

सन्तान अनुराग का बोध

मैं आपकी रोशनी में प्राय: प्रतिदिन इन दो विषयों पर विचार करता रहा हूं :-

(क) काम अनुराग मूलक नीच बन्धन

(ख) सन्तान अनुराग मूलक नीच मोह बन्धन आदि।

सन्तान अनुराग के सम्बन्ध में मुझे जो कुछ अनुभव होता रहा है, वह यह है:-

(१) इस अनुराग से परिचालित होकर मैं अपने बच्चों के स्थूल शरीर को प्यार करता हूं। यह मुझे उनके आत्माओं की सम्भाल और रक्षा की ओर ले जाने की योग्यता नहीं रखता। इसलिए मैं अस्थिर और असार धरती पर चलता हूं: क्योंकि एक तो उनके आत्मिक हित की ओर से अन्धा होकर मैं उनका उच्च कोटि का उपकारी नहीं बन सकता, दूसरे मैं उस वस्तु, अर्थात उनके स्थूल शरीर को जिसे, सदा के लिए इस संसार में रखना असम्भव है, प्यार करता हूं। अत: मैं अपनी जिन्दगी रेत पर खड़ी करता हूं, और जब मुसीबतें आती हैं- कि जो अवश्य आती हैं-रेत की नींव खिसक जाती है, तब मानो मेरा सब कुछ लुट जाता है। यह अवस्था कैसी भयानक और कितनी शोचनीय!

(२) मुझे केवल उनके स्थूल शरीर ही दिखाई देते हैं। उनकी शारीरिक आवश्यकताएं या शारीरिक सुखों का अभाव जितना मुझे बेचैन करता है, उतना बेचैन मुझे उनकी आत्मिक आवश्यकताएं नहीं करतीं। इससे मेरा बहुत अनिष्ट हो सकता हैं जैसा कि उन अनेक जनों का हुआ है जो अपने बच्चों के लिए रुपया छोड़ जाने या उनके शरीरों के लिए सुख स्वाद के सामान जुटाने और उन्हें मानसिक शिक्षा देने के लिए उच्च वातावरण को छोड़ गए हैं और अपने बच्चों को भी उससे बाहर ले गए हैं। मुझे पता है कि कुछ अवस्थाओं में माता पिता की गलती के कारण बच्चे देव समाज को ही छोड़ गए हैं।

(३) यदि यह सन्तान का अनुचित प्यार बहुत बढ़ जाए, तो यह मुझे उच्च जीवन और पर-सेवा से दूर ले जाएगा और मेरा बहुत सा कार्यगत समय स्वार्थ पूर्ति में व्यतीत होगा और मैं खुशी खुशी नीच वस्तु के लिए श्रेष्ठ वस्तु की कुर्बानी दूंगा।

(४) यह मुझे अन्यायकारी (unjust) और अनुदार (unfair) बनाता है।

(५) इसके अधीन रह कर मुझे अपने बच्चों के तो पहाड़ जैसे दोष भी राई जितने दिखाई देते हैं और दूसरों के छोटे दोष भी पहाड़ जितने लगते हैं। इस प्रकार मेरी देखने की ताकत पर परदा छा जाता है।

(६) सन्तान का प्यार नीच आत्माओं को मेरा मालिक बनाता है जो कि एक भयानक स्थिति है।

(७) जितने अंश यह मोह बलवान होता है, उतने ही अंश आपके साथ मेरा सम्बन्ध कमज़ोर होता है। मैं इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं।

(८) उच्च जीवन में मेरा विकास खतरे में पड़ जाता है।

मैं अब इस अंग में अपने अपको अधिक रोशनी में पाता हूं। और अभी कई महीने और कई वर्ष मैं इस पर चिन्तन करूंगा। सम्भव है, आपकी शक्ति पाकर मैं इन नीच अनुरागों से ऊपर हो सकूं।

देव ज्योति में ही हमें अपनी उल्टी दृष्टि का बोध होता है

मेरे भगवन्!

कुछ समय से मैं प्राय: प्रतिदिन अपने निज के साधन में 'मनुष्यात्मा के संबंध तत्त्व' नामक अति मूल्यवान पुस्तक का पाठ करता हूं। मैंने उस अध्याय का बार बार पाठ किया है जिसमें नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से उत्पन्न महा भयानक फलों का वर्णन है। इनमें से एक है आत्मा की उल्टी दृष्टि। यह फल उतना ही सच है जितना कि यह भयानक है। इस प्रकार के कुछ तजरुबे मैं अपने और दूसरों के जीवनों से नीचे लिखता हूं-

१. माता के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

मेरी बहुत छोटी सी आयु में मेरे पिता जी का देहांत हो गया था। मेरी माता जी ने हमें पालने में बहुत संग्राम किया। आपकी अद्वितीय रोशनी प्राप्त करने से पहले मेरे दिल में विषैला विचार उठता था। वह यह था कि जब मैं अपने कमाए हुए पैसों से उनकी सहायता करता, तो मैं यह समझा करता कि मैं माता पर एहसान कर रहा हूं। आपकी रोशनी में मैं अनुभव करता हूं कि यह भाव कितना ग़लत था। मैं माता के ऋण को अपनी तुच्छ सी सेवाओं से कैसे उतार सकता था? उन पर कोई मेहरबानी करने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता था। मुझे आपने एक भयानक उलटी दृष्टि से बचा लिया।

जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो मेरी माननीय माता जी को किसी दूर के स्थान में एक भारी बंडल ले जाना था। उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए कहा। बंडल उनके लिए बहुत भारी था और हमें अन्य कोई सहायता प्राप्त नहीं थी, इसलिए वह मुझे ले जाना पड़ा। लेकिन सारा रास्ता में उनके प्रति कठोर शब्द बोलता रहा और बुड़बड़ाता रहा। इसका कारण यह नहीं था कि मैं बंडल उठा नहीं सकता था। इसका कारण तो यह था कि मैं समझता था कि मैं ऐसा काम करके लोगों की नज़रों में छोटा हो जाऊंगा। यह मेरी शोचनीय उल्टी दृष्टि थी। आपकी रोशनी से वंचित होने के कारण मैं नहीं देख सका कि मेरी माता को मदद की जरूरत है, वह माता जिसने मेरी इतनी बड़ी सेवा की है। मैं इस धोखे में रहता था कि सारे संसार की आंखे मेरी ओर लगी हुई हैं, मानों दुनियां को अन्य कोई काम नहीं नहीं और यह मान भी लिया जाए कि लोग मेरी कल्पना के अनुसार ही सोचते होंगे, तो भी मैं कोई पाप नहीं कर रहा था। हाय! मेरी कैसी भयानक अवस्था कि मैं नीच दुनियादारों की ओर से कुछ प्रशंसा के खोखले शब्द न मिलने के डर से अपनी माता की भी सहायता न करूं।

२. अध्यापकों के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

जिस संगत में मैं रहता था, उसने मुझे यह दिखाया कि अध्यापकों का अपमान करना एक अच्छी बात है। जब मैं कालेज में गया, तो मुझे बताया गया कि कालेज का विद्यार्थी तो एक स्वतंत्र पक्षी है और उसे अधिकार है कि जो प्रोफेसर उसकी आज़ादी में दख़ल दे, उसे उसका मजा चखाए। मेरे भीतर यह विश्वास भरा गया कि जमात में प्रोफेसर की हंसी उड़ाना या उसकी पीठ पीछे उसका मखौल उड़ाना एक आज़ाद कालिजिएट की निशानी है। अपने दिनों में मैं भी कुछ अध्यापकों का अपमान किया, उनकी आज्ञा के विरुद्ध हरकतें की और प्रोफेसरों का मखौल उड़ाने में दूसरों का साथ दिया। अब यह सारी अवस्था मुझे एक भयानक उल्टी दृष्टि मालूम होती है।

आपकी देव ज्योति पाने के बाद कालेज में ही मेरा व्यवहार बदल गया। परन्तु बीते जीवन के दुखदाई धब्बे मेरी आत्मा पर वर्तमान हैं और मैं उन दिनों को याद करके रोता हूं जब मैं ऐसे विषाक्त

प्रभावों से घिरा हुआ था। आपकी ही देव ज्योति में मुझे दिखाई दिया कि मेरे अध्यापक मेरे उपकारी थे। कालेज के दिनों में जब मुझे आपकी शरण मिल चुकी थी तो जिन अध्यापकों का मैंने उनके सम्बन्ध में अपनी नीच गतियों का अपने उस समय की योग्यता के अनुसार यथा समर्थ्य परिशोध किया। अध्यापक दंग रह गए और उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हारे अन्दर यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे आ गया? मैंने उन्हें देव समाज के द्वारा अपने जीवन में आए परिवर्तन की कथा सुनाई।

३. आत्मिक उपकारी के संबंध में दुश्चिन्ताएं

जब मेरे अंहकार के नीच अनुराग पर चोट लगती है तो मेरी निगाह उल्टी हो जाती है। मुझे श्री भाई मोहन देव जी के सम्बन्ध में एक घटना याद है। यह बम्बई की और 1905 ई. की बात है, जबकि मैं कालेज के वातावरण से विषाक्त था। मैं क्षुद्र प्रकार की बातें करने लगा। उन्हें इससे दुख हुआ और तनिक कड़े शब्दों में मुझे समझाया। इस पर मै उल्ट पुलट हो गया। कम से कम उस समय के लिए उनके सब उपकार मैं भूल गया और मैं उनके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करने लगा। कैसी भयानक उल्टी दृष्टि! वह मेरे महान उपकारियों में से एक थे, जिन्होंने मुझे उस समय समझाया जब मैं ग़ल्त जा रहा था, परन्तु मैं उन्हें उस समय मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय करने वाला अनुभव किया।

४. अपने दोषों को मानने के सम्बन्ध में उल्टे विश्वास

जब मैं अपनी पुरानी बिरादरी और पुराने सम्बन्धियों और सोसाइटी के वातावरण में सांस लेता था, तो एक और विषैली धारणा मेरे दिल में प्रवेश कर गई थी, जिसने अब तक भी मेरे दिमाग से अपना अधिकार पूर्ण रूप से नहीं छोड़ा। वह उल्टी धारणा यह थी कि जो मनुष्य जीवन में सफल होना चाहता है, उसे अपने आप को दुनिया के सामने ठीक ठाक प्रगट करना चाहिए, चाहे उसके आत्मा को विनाश के कीड़े खा रहे हों। जीवन का मंत्र यह बना हुआ था, "जो मन में आए करो, परन्तु कानून की पकड़ में आने से सावधान रहो।" आपकी ज्योति में यह विश्वास कितना भयानक प्रतीत होता है। आपकी ज्योति दिखाती है कि चाहे मुझे कोई न भी देखे, तो भी मेरा आत्मा प्रत्येक नीच भाव, विचार, और कार्य से नीच बनता है, और सोसाइटी में मुझे केवल उसी स्थान या पद की इच्छा करनी चाहिए जिसका मैं अधिकारी हूं। ऐसे मान यश की भूख नहीं रखनी चाहिए जिसका कि मैं अधिकारी नहीं।

उपरोक्त दूषित प्रभावों ने जो मैंने पुरानी सोसाइटी से प्राप्त किए, मुझे लम्बे काल तक अपने दोषों को देखने, और देखने पर उन्हें मान लेने के अयोग्य बनाए रखा। उन्होंने मेरे भीतर झूठी प्रशंसा और बड़ाई की लालसा भी पैदा कर दी, चाहे मैं उसका अधिकारी न भी हूं। कैसी उल्टी दृष्टि!

५. झूठा दिखावा

मेरे प्रान्त के बहुत से विद्यार्थी जब कभी अपने प्रान्त से बाहर जाते, तो अमीरों की न्याई ठाठ बाठ से पहनते, खाना खाते और रहते सहते, चाहे उस फिज़ूलखर्ची के कारण मां बाप को दुखी दिन और बेचैन रातें काटनी पड़ती। हमारे रहन सहन को देख कर वहां के विद्यार्थियों पर यह प्रभाव पड़ता कि यह राजकुमार हैं। हम अपने आपको बहुत बड़ा प्रगट करते। हमारे प्रान्त के एक भद्र पुरूष, जो प्रान्त के मुख्य नगर में रहते थे, हमारी ऐसी दशा को देख कर बड़े दुखी और निराश हुए और उन्होंने हमारा असली रूप दिखाते हुए एक पत्र अंग्रेजी दैनिक अखबार को

लिखा। झूठी और बनावटी पोज़ीशन बनाए रखने की हानियों से बचाने की उनकी कोशिश का धन्यवाद करने के स्थान पर मैंने और दूसरे विद्यार्थियों ने उन्हें बुरा भला कहा और उन पर झूठे इलज़ाम लगाए।

आपकी ज्योति ने इस सम्बन्ध में मेरे दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है। और आपकी शक्ति से मैं किसी सीमा तक दूसरों के सामने अपने आपको झूठ मूठ बढ़िया दिखाने की आदत को छोड़ने के योग्य हो गया हूं।

एक दिन मैं जिला मैजिस्ट्रेट - जो देव समाज के सम्पर्क से प्राप्त उच्च चरित्र के कारण मेरा बड़ा मान करते थे - के सामने गया। उन्होंने मुझे कहा कि तुम्हारी आय प्रति मास कम से कम एक हज़ार रुपए तो होगी। यह बात ठीक न थी। मैं आपके विकासकारी प्रभावों के अधीन आ चुका था, इसलिए मैं वहीं और उसी समय बताए बिना न रह सका कि ऐसा नहीं है। परन्तु जब मैंने अपनी आत्म परीक्षा की तो मैंने देखा कि उसका ऊंचा अनुमान चाहे गलत था, परन्तु मुझे ऐसा सुनना सुखदायक लगा और उसे ग़लत बताने के लिए मुझे ज़ोर लगाना पड़ा।

मेरे सामने एक भारी सचाई प्रगट हुई। एक बात बिल्कुल झूठी थी, इसने मुझे खुश किया, क्योंकि उससे मेरे प्रशंसा अनुराग की तृप्ति हुई। और जब मैं इसे ठीक किया और मैं सचाई पर चल रहा था, तो मुझे इसके लिए दिल पर ज़ोर देना पड़ा। कैसी उल्टी दृष्टि।

६. जीवन के लक्ष्य के विषय में उल्टी दृष्टि

उल्टी दृष्टि की सबसे भयानक अवस्था जो मुझे आपकी रोशनी में दिखाई देती है, वह यह है कि मनुष्य गौण या साधन मात्र बनने वाली वस्तुओं को मुख्य वस्तु समझे और उन्हीं को अपने जीवन का लक्ष्य माने। आपकी ज्योति इस बात को स्पष्ट रूप से दिखाती है, कि धन तभी लाभदायक हो सकता है जब हम इसे भलाई और विकास में सहायक बना सकें। अन्यथा यदि हम उसे ही अपना लक्ष्य समझकर उसके पीछे दौड़ेंगे, तो यह हमें अपना दास बना लेगा और हमारा पतन करेगा। मेरे सन्मुख अनेक मनुष्यों के - कुछ देव समाज के सभासदों के भी - दृष्टान्त हैं जो अपकी ज्योति से वंचित हैं और जो धन को केवन धन के लिए प्यार करते और कीमती समझते हैं। उन्हें इसकी प्राप्ति से वही सुख मिलता है, जो एक शराबी को शराब का एक के बाद दूसरा प्याला चढ़ाकर मिलता है। उन्माद की अवस्था उन्हें बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि उनके पास पहले ही शेष सारे जीवन को इज़्जत से निर्वाह करने के लिए काफी धन है, परन्तु वह उसके नशे को तोड़ नहीं सकते। यदि वह धन दौलत की सनक छोड़ दें, और अपने आत्मा की भलाई का फिक्र करें, तो वह अपने और दूसरों के लिए बहुत हितकर प्रमाणित हो सकते हैं। परन्तु वह तब तक ऐसा नहीं कर सकते, जब तक आपकी ज्योति और शक्ति उनके भीतर प्रवेश करने का अवसर पाकर इस अंग में भी उनके भीतर शुभ परिवर्तन नहीं ला देती जैसा कि उनके जीवन के अन्य अंगों में उच्च परिवर्तन आया है।

वह आत्मा जो आपके देव प्रभावों के द्वारा इस धन के मोह से उद्धार पा चुके हैं, जानते हैं कि एक समय था जब वह इस भयानक उलटी दृष्टि के शिकार थे।

एक बड़े खानदान का एक नौजवान ग्रेजूएट डाक्टर बनना चाहता था। जब उसे डाक्टर बनने का कारण पूछा गया, तो उसने कहा, "इसलिए कि लोग मेरी एक मूर्ति नगर के एक गेट के नज़दीक खड़ी करें।" उससे प्रश्न किया गया कि तुम्हारा बुत्त क्यों बनाएं?" उसने उत्तर दिया कि मैं लोगों की सेवा

करूंगा और दान दूंगा।

यह उल्टी दृष्टि की एक विचित्र घटना है। वह लोगों में नाम पाने के लिए दूसरों की सेवा करना और धन कमाना चाहता था। जीवन के लक्ष्य के विषय में कैसी उल्टी दृष्टि!

परन्तु आपकी शक्ति ले उसे बदल दिया और उसने धन कमाने वाले सब काम छोड़ दिए और अब वह वर्षो से देव समाज में मिशनरी के रूप में काम कर रहा है।

इस अंग में मेरी अपनी उलटी दृष्टि भी बड़ी सीमा तक दूर हो गई है। मैंने भी हर अच्छे या बुरे ढंग से धन इकटठा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था, ताकि मैं ऊंचे सामाजिक सम्बन्ध और सांसारिक पदवी प्राप्त कर सकूं। जीवन के बारे में कैसा अन्धकार और कितना क्षुद्र लक्ष्य! आपने देव प्रभाव संचार करके मेरी दृष्टि बदलने और मुझे बचाने की कृपा की।

आप की महान ज्योति में मैं देखता हूं कि मुझे उल्टी दृष्टि से बचाने के लिए आपकी देव ज्योति और आपके देव तेज से बढ़कर कोई चीज़ कारगर नहीं। दूसरे शब्दों में मेरी दृष्टि ठीक रखने के लिए आपके देव प्रभावों से बढ़कर किसी चीज़ पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे कड़वा तजरुबा है कि जब मैं अपने ऊपर निर्भर करता हूं तो मेरी दृष्टि उल्टी हो जाती है और मैं जीवन का उच्च मार्ग देखने के अयोग्य हो जाता हूं। उच्च जीवन के श्रेष्ठ मार्ग को देखने और उस पर चलने के बिना मैं सुरक्षित नहीं। मैं महसूस करता हूं कि जब मेरे हृदय पर आपका सबसे बढ़कर अधिकार होगा और केवल आपके देव रूप की ओर मेरा दिल आकृष्ट होगा, तब मेरी जीवन यात्रा सबसे बढ़कर सफल होगी।

काश! यह अति कंगाल और तुच्छ हृदय आपके अद्वितीय देव प्रभावों को ग्रहण करे और इस संसार के पतनकारी प्रभावों से अपनी रक्षा कर सके।

जीवन सम्बन्धों में है

मेरे भगवन्!

आपकी अद्वितीय ज्योति में मैं देखता और अनुभव करता हूं कि इस दुखी देश को आपके आर्विभाव की नितान्त आवश्यकता थी। दुर्भाग्य से भारत ने ऐसे विचारक और फिलासफर उत्पन्न किए, जिन्होंने सम्बन्धों के जीवन को मुसीबत, दुख और कल्पित जन्म मरण का चक्कर बताया। इसीलिए उन्होंने सम्बन्धों के जीवन के लिए एक प्रकार की घृणा पैदा कर दी और किसी जंगल के कोने या पहाड़ की गुफा में तथाकथित योग और समाधि के द्वारा कल्पित ईश्वर की खोज पर बल दिया। इस भयानक फ़िलासफ़ी का तत्कालीन और सीधा नतीजा यह निकला कि रमते और निकम्मे साधुओं की एक भारी जमात उत्पन्न हो गई: जिनकी संख्या बढ़कर १ करोड़ से अधिक हो गई है। उन्होंने सब कर्त्तव्यों और ज़िम्मेवारियों को तिलांजली दे दी है। वह केवल अपने सुख के लिए दूसरों की कमाई पर जीते हैं। इसका असर यहीं तक सीमित नहीं था, उसने बहुत से निकम्मे पुरोहित या पुजारी पैदा कर दिए, जो रक्तपाई कीड़ों की न्याई दूसरों का लहू चूसते हैं। जो घरबारी रहे, उन पर भी उस हानिकारक फ़िलासफ़ी का भंयकर प्रभाव पड़ा। उन्होंने घर के जीवन को त्याग देने के योग्य समझा और दूसरों की भलाई से सर्वथा उदासीन हो गए। इस प्रकार प्राय: सारे भारतवासियों की दृष्टि में सारे ही सम्बन्ध बोझ और बखेड़ा बन गए। जो लोग दुनियां में रहे और जिन्होंने सम्बन्ध बनाए, उन्होंने केवल अपनी नीच वासनाओं की तृप्ति और स्वार्थ की पूर्ति के

लिए ऐसा किया। यह स्वार्थ धीरे - धीरे इतना बढ़ गया कि इसने भारत की एकता को छिन्न भिन्न कर दिया और इसे जातियों और उपजातियों के असंख्य टुकड़ों में बांट दिया। यह जातियां और उपजातियां एक दूसरे के साथ न विवाह का सम्बन्ध रखती हैं और न खानपान का...।

स्वार्थ ने एक एक साधारण भारतवासी के हृदय से दूसरों के प्रति सब उच्च भावों को नष्ट कर दिया, उसे विश्वगत सम्बन्धों से उदासीन करके निजी स्वार्थ की तंग कोठड़ी में धकेल दिया। नाना जगतों के सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेवारियों से उदासीन और अपने ही नीच स्वार्थ की तृप्ति भारतवासियों के लिए शाप प्रमाणित हुई। उसने सामाजिक जीवन और अपनी रक्षा के लिए दलबद्ध और संगठित होने की भावना समाप्त कर दी। इस खंडित और बिखरी दशा ने भारत को दूसरों की ओर ललचाई आंखों से ताकने वाले शून्य व्यक्तियों की धरती बना दिया।

अत: संग्रामशील जीवन जो दूसरों की भलाई में दिलचस्पी और उनके सम्बन्ध में उच्च कर्त्तव्यों के पालन से पैदा होता है, यहां पैदा नहीं हुआ। और वह उसी अवस्था में पड़े सड़ते रहे। पाश्विक प्रवृत्तियां और इस धरती पर राज्य करने लगी, क्योंकि वह इतनी शक्तिशाली थी कि फिलासफर उन्हें समाप्त नहीं कर सकते थे।... इसलिए भारत का घोर पतन हुआ। देश के इस फालिज के असल कारण को कोई नहीं देखता। उसे जीवित करने के सब प्रयत्नों का निष्फल होना स्वाभाविक है, क्योकि असल रोग का उन्हें ज्ञान नहीं। भारत नहीं जानता कि वेदान्त की महा भयानक फ़िलासफ़ी इसकी नस नस में प्रवेश कर गई है जिसने उसके भीतर कर्त्तव्य कर्मो के लिए अस्वभाविक घृणा उत्पन्न कर दी है। इस फिलासफी के अधिकार को परे फैंकने की नितान्त आवश्यकता है। हमें अपने आत्मनाश का बोध कराने और उच्च भावों के अभाव को दिखाने के लिए सर्वश्रेष्ठ आत्मिक ज्योति की आवश्यकता है। नीच और स्वार्थपरायण जीवन के भयानक रूप तथा सात्विक शक्तियों के सुन्दर रूप को दिखाने के लिए देव ज्योति की आवश्यकता है। इस गलत फिलासफी के भयानक पंजे तथा नीच शक्तियों और नीच लक्ष्य से मुक्त होने के लिए हमें अध्यात्मिक बल या तेज की आवश्यकता है। उच्च अथवा सात्विक भाव विकसित करने के लिए भी देव तेज की आवश्यकता है। हमारा समूचा आत्मिक जीवन नव निर्माण चाहता है।

भगवन्! ऐसा चमत्कार और ऐसी नई जागृति केवल आप उत्पन्न कर रहे हैं, क्योंकि आप ही सर्वश्रेष्ठ देव ज्योति और देव तेज के स्त्रोत हैं।...

हम न केवल अपने आपको नीच जीवन से बचाने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं, किन्तु अन्य आत्माओं के लिए भी उच्च सहानुभूति अनुभव करके उन्हें उनके नीच जीवन से बचाने में सहायता करते हैं। आपकी ज्योति और शक्ति हम जैसे बिल्कुल गए गुज़रे आत्माओं में भी दूसरों की उच्च सेवा के लिए उच्च भाव विकसित करने की आकांक्षा और योग्यता को जागृत कर देती हैं। यह एक आश्चर्य की बात है कि आपने ऐसे मनुष्य पैदा किए हैं, जो देव समाज से एक पैसा भी नहीं लेते, परन्तु अपना सारा या थोड़ा समय देकर इसके सर्वश्रेष्ठ कार्य की सच्चे दिल से सेवा करते हैं।

हमारे हृदयों में जब मैं आपकी अद्वितीय ज्योति और शक्ति के ऐसे स्वर्गीय फलों को देखता हूं, तो मैं आपके देवरूप के सन्मुख गहरी श्रद्धा से झुक जाता हूं। और यह प्रार्थना करने के लिए विवश हो जाता हूं कि मेरी मातृ भूमि - भारत माता - यह अनुभव कर सके कि न केवल भारत, किन्तु सारे मनुष्य मात्र के बचावन हार भारत माता की गोद से ही आविर्भूत

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

हुए हैं, जो एक महा विस्मयजनक घटना है। उनकी पूजा ही भारत को एक शक्तिशाली, संगठित और श्रेष्ठ जाति बना सकती है।

विश्वगत सम्बन्धों में अपनी अवस्था का बोध

जीवनदाता भगवन्!

आपके भीतर हममें नए और उच्च बोध जागृत करने की शक्ति है। आप हमारे पाषाण, हृदय-हीन, कठोर और मुरदा दिलों को जीवित, जागृत, कोमल और भाव-पूर्ण दिलों में परिवर्तित कर रहे हैं। आप मानो मिटट्ी में प्राण संचार करके जड़ को चेतन बना रहे हैं।

आपके इस महान कार्य की लीला मैंने स्वंय अपने तथा दूसरों के जीवन में देखी है। आपके पवित्र प्रभावों में आने से पहले मैं अपने नाना सम्बन्धों में कोई उच्च बोध नहीं रखता था। मैं केवल संस्कार और रिवाज के अनुसार माता के साथ रहता था, परन्तु उनका उपकारी रूप कभी देख नहीं सकता था, और न ही मैं उनके लिए उतनी गहराई में महसूस कर सकता था। आपके अद्वितीय प्रभावों से जीवित होकर मैंने कुछ अनुभव करना आरम्भ किया। मेरे देव समाजी बनने से पहले मेरे पिता जी परलोक सिधार गए थे। मैंने उनके सम्बन्ध में कुछ अपराध किए थे। उनकी मृत्यु के कई साल बाद यह अपहरण मूलक गतियां मेरे सामने आने से मेरे दिल में दुख पैदा करने लगी।

मैंने गलितयां की थी, परन्तु मैं मुरदा जड़ पदार्थ बना रहा। वह गलितयां करते समय या उसके बहुत देर बाद भी मैं उन्हें महसूस न कर सका, परन्तु जब आपके अद्वितीय प्रभावों ने मेरे ऊपर काम करना आरम्भ किया, तब मैंने होश में आना और दुख महसूस करना शुरू किया। इसी प्रकार अनेक बार मैंने अपनी माता के सम्बन्ध में की गई अपनी नीच गतियों को याद किया और दुख महसूस किया है, केवल इसी सम्बन्ध में भी ऐसी अनुपम चेतना और जागृति पैदा कर दी है कि यदि किसी समय मैं अपने किसी नीच अनुराग के अधीन होकर उनके सम्बन्ध में गलत जाता हूं, तो वहीं और उसी समय शरमिन्दगी, पछतावे और दुख की भावना मेरे अन्दर पैदा होती है और मैं अपने आप को धिक्कारने और दूसरों से क्षमा मांगने लगता हूं।... परन्तु पहले ऐसा न था। आपके जीवन दायक देव प्रभावों ने लगातार काम करके मेरे जीवन की जड़ मशीन को एक जीवित गठन में बदल दिया है, जो एक सीमा तक दूसरों का दुख महसूस कर सकती और उससे दुखी हो सकती है।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts